ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in December 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

देश की स्वतंत्रता में विद्वानों की भूमिका

डॉ. विजय शंकर कौशिक, सहायक आचार्य (इतिहास विभाग)

प्रस्तावित अनुसंधान की भूमिका

स्वतन्त्रता के संघर्ष में उग्रदल ने और अधिक अतिवादी होकर देश में आतंक स्थापित करने वाली ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह का वातावरण निर्मित किया क्या संघर्षशील सशस्त्र प्रगति का। मार्ग चुना। इस संघर्ष केपीछे निश्चय ही राजनीतिक, आर्थिक, धार्िक और सामाजिक कारण रहे है जिन्होंने मूल प्रेक सत्य के रूप में स्वाधीनता संघर्ष को गति प्रदान किया। ब्रिटिश शासन को स्थान-स्थान भारतीय जनता के विरोध का सामना करनापडा थाजो कार्य स्थानीय राजे-महाराजे नहीं कर सके थे, उन कार्यों को साधारण जनता ने किया था। प्रतिरोध करने वाली सायारण जनता में पर जमीदार, धार्म-परायण तथा समाज के अन्य वर्ग सम्मिलित थे जिनके हितों को ब्रिटिश शासन से आघात पहुँचाया था। बस्तुत विदेशी प्रभुत्व के आर्थिक शोषण और प्रशासनिक दुर्बलता के जनमानस में तीव्र प्रतिक्रिया को जन्म दिया। परिणामस्वरूप, विदेशी शासन का भारत के विमिन्न भागों में अक्सर विरोध किया जाता रहा। जिसमें विद्वानों का विरोध भी सम्मिलित था। एच्च शिक्षा प्रात करके लोग विश्वविद्ालयों से बाहर आने लगे। किंन्तु ऐसे योग्य लोगों को अंग्रेजों की तुलना में कोई भी उच्च सरकारी पदे नहीं मिलते थे और ऐसे भारतीयों को हेय दृष्टि से देखा जाता था। पदों के लिए आई.सी.एस. की परीक्षा केवल इग्लैण्ड में आयोजित होती थी, जबकि दादाभाई नौरोजी का यह तर्क था १क यह परीक्षा भारत में भी साथ-साथ आयोजित की जानी चाहिए ताकि अधिक से अधिक भारतीय इसमें शामिल हो सक, किन्तु ब्रिटिश भारत सरकार ने इसे अस्वीकार कर दिया। फलस्वरूप देश में धीरे-श्वीरे राष्ट्रीय शिक्षा की आवश्यकता का अनुभव किया जाने लं़ा। देश के नेता शाष्ट्रीय विचारश्ारा और बिटिश नियन्राण से मुक्त शिकषा संस्थाओं के निर्माण पर कार्य करने लगे। राष्ट्रीय शिक्षाके निमित् महामना मालवीय, रीन्द्रनाथ टैगोर, हीरेन्द्रनाथ दत्त, विपिन चन्द्र पाल तथा अन्य बुद्दिजीवियों ने यह निश्चय किया कि राष्रीय शिक्षा के निमित्त नए राष्ट्रीय विश्वविद्यालय और शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की जाये। इस सम्बन्ध में छात्रों का आन्दोलन भी प्रारम्भ हो गया। जिसे दबाने के लिए सरकारी तन्त्र का उपयोग किया जाने लगा। इसी साल मार्च 1906 ई. में राष्ट्रीय शिक्षा के हत्थान के लिए 'राष्ट्रीय शिक्षा परिषद' की स्थापना की गई तथा इसके लिए अरविन्द और गुरूदास दास् बनर्जी का आशीवांद प्रात किया गया। इस नए राष्ट्रीय विचारधारा के प्रमुख वक्त विपिन चन्द्र पाल थे। ए.आर, देसाई ने लिखा है कि देश में शिक्षितों की संख्या बढ़ती गई और उनमें वर्तमान प्रशासन क विरुद्ध असन्तोष व्याप्त हो चला था। शिक्षा पर नियन्त्रण स्थापित करने के साथ-साथ ब्रिटिश सरकार ने प्रेस और समाचार पत्रों पर अनेक प्रतिबन्टा लगाया तथा उनकी स्वतन्त्र रिथति पर कड़ी नजर रही अत आपत्ति- जनक सामग्री के प्रकाशन और वितरण पर सरकार द्वारा पाबन्दियाँ लगाये जाने से शिक्षित जनता में सरकारी नीति के प्रति असन्तोष उत्पन्न हुआ, जिसने युद्धोन्मुखी आन्दोलन को प्र्य दिया। समय-समय पर अधिनियम पारित किये। सरकार ने ऐसे अनेक नियन्त्रण युक्त 1823 ई, के एक अधिनियम के अनुसार सरंकार को यह अधिकार था कि वह आपत्ति जनक सामग्री के कारण किसी भी समाचार पत्र या पुस्तक को जब्त कर सकती थी। इस अधिनियम का राजाराम मोहन राय और टाकुर द्वारिका नाथ ने विरोध किया था।

प्रस्तावित अनुसंधान के सोपान

स्वामी विवेकानन्द ने अपने आध्यात्मिक विचारों और संदेशों से समस्त हिंू जनता के मस्तिष्क को आंदोलित कर दिया तशा यह निर्भयतापूर्वक कहा कि अतीत के मिथ्यागौरव की बात करना व्थ्य है। उन्होंने 1893ई. में अमेरिका के शिकागो नामक नगर में आयोजित "विश्व धर्म सम्मेलनश में हिंदू धर्म पर अपना भाषण देकर सबको चकित कर दिया तथा अपने देश का मान बढाया । उन्होंने अपने देश। वासियों की आधुनिक सम्यता के परिप्रेष्य् में अपने देश के गौरव को बनाये रखने के लिए निर्दशित किया।

राजाराम मोहन राय, देवेन्द्रनाथ टाकुर, स्वामी दयानन्द. रामकृष्ण परमहंस, महागोविन्द रानाडे, विवेकानन्द जैसे सुधारकों ने अपने लोंगों और भाषणों कं माृयम से हिन्बुओं की कुरीतियों, जॉति-पांति के मेदभाव और धार्मिक आड्बरों को समाप्त करने की सलाह दी तथा आधुनिक शिक्षा और संस्कृति की ओर उन्मुख होने के लिए दलील दी। पाशचात्य शिक्षा के प्रसार ने 19वीं शताब्दी कं पुनर्जागरण एवं सुधार आंदोलन का प्रारंभ किया। ड्सके कारण नयी जागरूकता ने जन्म लिया जिसने समाज एवं हिन्दू धर्म की शुद्दिकरण पर बल दिया तथा सामाजिक-धार्मिक पूर्व धारणाओं, अंधविश्वासो

INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in December 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

एवं जातीय अवरोधों को हटाने का लक्ष्य बनाया। इस समय जनता कं प्रताव में दो स्पषट प्रतियाँ थी, जो भारत को अन्धकार पूर्ण समय रूपी पराधीनता से मुक्ति दिलाना चाहती थीं।

प्रस्तावित अनुसंधान का महत्व

राजस्थान के इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएँ. प्रमुख राजवंश, इनकी प्रशासनिक एवं राजस्ब व्यवस्था, सामाजिक-सांस्कृतिक मु. राजस्थान के स्वतत्रंता आन्दोलन, राजनैतिक जन जागरण, एक राजनैतिक एकीकरण की व्याख्या की है। इसके साथ-साथ राजस्थान में क्रांतिकारी आंदोलन के ऐतिहासिक विवेचन की विस्तार से रूपरेखा प्रस्तुत की है। राजसथान के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तिव्त के साथ-साथ उनके कृतित्व का विस्तारपूर्वक विश्लेषण किया गया है। तत्कालिक रथापत्य कला की प्रमुख विशेषताओं, स्मारकों, किलों, जो कि राजस्थान के कांतिकारी आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका के रूप में रहे का विस्तारपूर्वक व्याख्या की गई है। साथ ही तत्कालिक लोक संगीत, राजस्थान के धार्मिक आंदोलन, संत सम्प्रदाय एवं लोक देवताओं जिन्होनें राजरशान के क्रांतिकारी आंदोलन में अपनी भूमिका का निर्वाह किया का विस्तार से तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। शोध कोई ऐसी प्रक्रिया नही है जो केवल धवरातल पर ही खोजबीन करे, इसमें गहन निरीक्षण मुख्य प्रत्यय है। दूसरा मुख्य विचार समस्या का विशिष्टीकरण हैं। इस प्रकार इसे यह कहा जा सकता है कि शोध एक सुसीमित करेके किसी समस्या का सर्वांगीण विशलेषण है। समस्या का आरस्भ जिज्ञासा से होता है जिज्ञासु व्यक्ति हीं शोध कार्य सफलता से कर सकता है।

प्रस्तावित अनुसंधान के उद्देश्य

राजरथान में क्रांतिकारी आंदोलन के ऐतिहासिक विवेचन में पुस्तक में सैनी जी ने मुख्यत: अलवर रियासत में नवजागरण राजस्थान के क्रांतिकारी आंदोलन में अलवर का योगदान, अलवर में आजादी के आंदोलन का शुरूवाती दौर कंसा रहा, अलवर राज्य प्रजामंडल की संघर्ष गाथा, नीमराणा का अलवर में विजय, गोवा मुक्ति आंदोलन अलवर क योगदान के रूप में राजस्शान के क्रांतिकारी आंदोलन का विस्तार से विवचेन किया गया है। साथ ही स्वाधीनता संघर्ष महत्तपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज का विवेचन करना I विश्वयुद्ध के बाद की दीर्कालीन रणनीति, शाष्ट्रीय लहर, आजादी और भारत विभाजन, राष्ट्रीय आंदोलनों की दीर्घकालीन रणनीति, राष्ट्रीय आंदोलन के वैचारिक आयाम, भारत पर औपनिरं् शक प्रभाव आदी का विस्तार से विश्लेषणात्मक विवेचन करना I

प्रस्तावित शोध के निष्कर्ष

18बी सदी में आन्तरिक संघों से भारत तबाह हो चुका था तथा भारत में आन्तरिक विभ्म का दौर चल रहा था। यह सिथिति पुरानी व्यवस्था के विघटन और विकास की सामान्य प्रक्रिया में व्यापार, जहाजरानी तथा भारतीय समाज में उत्पादन हितों के आधार पर पूंजीपति वर्ग की सत्ता के उदय क लिए आवश्यक थी। फिर भी इस नाजुक अवधि के दौरान अपने उत्तम तकनीकि और सैनिक एपकरणों तथा सामाजिक आर्थिक सम्बद्दता के साथ यूरोप के और भी अधिक विकसित पूंजीपति 'वर्ग ने जो धावा बोला उससे विकास अवरुदध हो गया जिसके परिणाम स्वरूप पुरानी व्यवर्था के विघटन के समय भारत में उमर रहे नव पूंजीपति वर्ग को भूणावरथा में ही नष्ट कर दिया।

इस तरह जो औद्योगिक क्रान्ति आई उसके परिणाम- स्वरूप इंग्लैण्ड में एक शक्तिशाली औह्योगिक वर्गं का जन्म हुआ। इस वर्गं ने शनै-शनै. राज्य सत्ता पर अपना अधिकार जमाया और प्राच्य देशों से व्यापार करने के ईस्ट इण्डिया कम्पनी के एकाधिकार को खत्म करने के लिए इस राज्य सत्ता का उपभोग किया। इस बर्ग ने कम्पनी को इसके लिए भी बाध्य किया किवह ऐसे राजनीतिक और आर्थिक कदम उठाये जो ब्रिटिश उद्योगों के हित में हो।

संदर्भ

1. भगवान दास केला : देशी राज्यों में जन जागृति
2. भारद्वाज शांति : हडौती का स्वतंत्रता आन्दोलन(1857-1947) कोटा
3. चौधरी, रामनारायण : बीसवीं सदी का राजस्थान, अजमेर, 1982 ई
4. चौधरी, रामनारायण : बापू मैने क्या देखा, क्या पाया, भारत सरकार, 1964 ई
5. चौधरी, रामनारायण : अंजना देवी चौधरी, अजमेर. 1983 ई.